तुम बैठाए बैठत हों, मुझ में नहीं ताकत।
बैठी कदम तले हक, ए भी तुम कहावत।।७९ ।।

अब आपके बिठाने से ही मैं बैठती हूं। मेरी ताकत कुछ नहीं है। आपके चरणों तले बैठी हूं। यह भी आप ही कहलवाते हो।

महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम।।८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्रीतम! अब मेरे लिए और कोई प्रयत्न (उपाय) नहीं है। आपके चरणों के तले निडरता के साथ बैठ जाने के सिवाय और कोई ठिकाना नहीं है।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५२२ ।।

हक रूहन की खिलवत

खिलवत हक रूहन की, जो इस्क रूहों असल।
ए बातून बका अर्स की, बीच न आवे फना अकल।। १ ।।

श्री राजजी महाराज की और रूहों की मूल बैठक में ही रूहों का सच्चा प्रेम है। यह अखण्ड घर की बातूनी (छिपी) बातें हैं। यह संसार के मिट जाने वाले जीवों की अकल में नहीं आ सकतीं।

रूहें बड़ी रूह सों मिल के, बहस किया हकसों।
हम तुमारे आसिक, इस्क है हम मों।। २ ।।

बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर श्री राजजी से बहस की कि हम आपके आशिक हैं। हमारे अन्दर पूर्ण इश्क है।

बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम।। ३ ।।

श्री श्यामाजी कहती हैं, हे रूहो। तुम सत्य कह रही हो, परन्तु इश्क तो मेरा काम ही है। पहले श्री राजजी महाराज से इश्क लेना और फिर रूहों को इश्क देना। इसी में मुझे सुख चैन मिलता है।

फेर जवाब रूहन को, इन विध दिया हक।
इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक।। ४ ।।

फिर श्री राजजी महाराज ने रूहों को उत्तर दिया कि भले तुम मुझे इश्क करती हो, पर आशिक तुम्हारा मैं हूं।

हक आसिक बड़ीरूह का, और रूहों का आसिक।
ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बंदों का आसिक हक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों के आशिक हैं। इस बात को सीधा कैसे कह दिया जाए कि श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के आशिक हैं?

रूहें चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ीरूह के।
और बड़ीरूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।। ६ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज और श्यामाजी दोनों के आशिक होना चाहिए। श्यामाजी को भी श्री राजजी के आशिक होना चाहिए। इश्क का सीधा फैसला तो यही है।

Nijanand App

तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुम सों इस्क जो मेरे दिल।
ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल।।७।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि तुम सब रूहें मेरे तन हो और तुमको मैं दिल से कितना इश्क करता हूं। इसका ब्यौरा तुम सब मिलकर भी परमधाम में विचारो तो भी तुम्हारी समझ में नहीं आ सकता।

तब हक के दिल में उपज्या, मैं देखाऊं अपना इस्क।
और देखाऊं साहेबी, रूहें जानत नहीं मुतलक।।८।।

तब श्री राजजी महाराज के दिल में बात आई कि मैं अपना इश्क और साहेबी रूहों को दिखाऊं, क्योंकि रूहें इस बारे में नहीं जानतीं।

तब हक के अंग का नूर जो, जो है नूरजलाल।
तब तिनके दिल पैदा हुआ, देखों इस्क नूरजमाल।।९।।

तब श्री राजजी महाराज के नूरी सत अंग जो अक्षर ब्रह्म हैं, उनके दिल में नूरजमाल श्री राजजी महाराज की इश्क लीला देखने की चाह पैदा हुई।

कैसा इस्क बड़ीरूह सों, कैसा इस्क साथ रूहन।
बड़ीरूह का इस्क हक सों, इस्क हक सों कैसा है सबन।।१०।।

बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों के साथ श्री राजजी महाराज कैसा इश्क करते हैं और बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहें श्री राजजी से कैसा इश्क करती हैं, यह जानने की इच्छा अक्षर ब्रह्म को हुई।

एह रब्द हमेसा रहे, बड़ीरूह रूहें और हक।
अब घट बढ़ क्यों कर जानिए, वाहेदत पूरा इस्क।।११।।

श्यामा महारानी, रूहें और श्री राजजी महाराज के बीच यह वार्तालाप हमेशा ही होता रहता था। परमधाम तो पूरा अद्वैत और पूर्ण इश्क से भरा है, तो वहां कम और ज्यादा कैसे जाना जाए?

असल जुदागी अर्स में, सो तो कबूं न होए।
वाहेदत इस्क घट बढ़, क्यों कर होवे दोए।।१२।।

परमधाम में तो जुदाई किसी तरह से हो नहीं सकती। तो फिर कम ज्यादा इश्क होने की पहचान अद्वैत में कैसे हो?

वाहेदत कहिए इनको, तन मन एक इस्क।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत का बेसक।।१३।।

अद्वैत वाहेदत (एकदिली) उसी को कहते है जहां तन-मन एक ही पारब्रह्म के इश्क में गर्क हों। परमधाम में जुदाई जरा भी नहीं हो सकती।

तो बेवरा कबूं न पाइए, बीच अर्स वाहेदत।
इस्क बेवरा तो पाइए, जो कछू होए जुदागी इत।।१४।।

इसलिए परमधाम की अद्वैत भूमि में इश्क का ब्यौरा सम्भव नहीं। इश्क का ब्यौरा तभी सम्भव हो सकता है जब वहां जुदाई हो।

Nijanand App

जो इस्क वाहेदत का, ए जो किया मजकूर।
ए बेवरा क्यों पाइए, कोई होए न पल एक दूर।। १५ ।।

अद्वैत परमधाम की इश्क भूमि पर इश्क का ब्यौरा जिसका जिक्र हो रहा है, कैसे हो सकता है? क्योंकि एक पल के लिए भी कोई वहां से जुदा नहीं हो सकता।

अर्स बका में जुदागी, सुपने कबूं न होए।
तो हक इस्क का बेवरा, क्यों पावे मोमिन कोए।। १६ ।।

परमधाम में तो जुदाई सपने में भी सम्भव नहीं है। फिर श्री राजजी महाराज के इश्क का ब्यौरा मोमिन किस तरह से पा सकते हैं?

हकें कह्या रूहन को, मैं देखाऊं इस्क।
ए बेवरा इस्क का, तुम पाओगे बेसक।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा मैं अपना इश्क दिखाता हूं और तुम निश्चित ही मेरे इश्क का ब्यौरा कर सकोगे।

मैं छिपाऊं तुमको, बैठो कदम पकड़ के।
ए तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो मुझसे।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि तुम मेरे चरण पकड़ कर बैठो। मैं तुमको फरामोशी के परदे में छिपाता हूं। फिर तुम मुझे इश्क से ही पा सकोगे।

ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोको जाओ भूल।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल।। १९ ।।

यह इश्क तुम्हें तब मिलेगा जब तुम पहले मुझे भूल जाओगे। तुम मेरे से अलग होकर बैठो। फिर मैं तुम्हें याद दिलाने के लिए अपना रसूल (सन्देशवाहक) भेजूंगा।

मैं भेजों किताबत तुमको, सब इत की हकीकत।
तुम कहोगे किन खसमें, भेजी किताबत।। २० ।।

मैं तुमको धर्मग्रन्थों के द्वारा यहां की हकीकत लिखकर भेजूंगा। तुम ऐसे अनजान हो जाओगे और कहोगे कि कौन खाविन्द और कैसा ग्रन्थ और किस घर की बातें हैं?

सो कहां है हमारा खसम, कैसा खेल कौन हम।
रसूल देसी तुमें साहेदियां, पर मानोगे न तुम।। २१ ।।

श्री राजजी रूहों से कह रहे हैं कि तुम खेल में जाकर हैरान होकर पूछोगे, वह हमारा धनी कहां है, यह खेल क्या है और हम कौन हैं? मेरा रसूल तुम्हें गवांहियां देगा, पर तुम नहीं मानोगे।

कहां है हमारा वतन, कौन जिमी ए ठौर।
क्यों कर हम आए इत, बिना मलकूत है कोई और।। २२ ।।

हमारा वतन कहां है और हम किस भूमि पर हैं, हम यहां क्यों आए हैं, क्या बैकुण्ठ के अतिरिक्त भी कुछ आगे और है?

Nijanand App

पढ़ोगे सब साहेदियां, जो मैं लिखोंगा इसारत।
सो दिल में ल्याओगे, पर छूटेगी नहीं गफलत।। २३ ।।

जो कुछ ग्रन्थों में मैं इशारे से लिखूंगा तुम उसको पढ़ोगे और दिल में भी विचारोगे, पर यकीन नहीं आएगा। माया का कर्मकाण्ड नहीं छूटेगा।

मैं लिखोंगा रमूजें, और सिखाऊंगा मेरा इलम।
तिन इलम से चीन्होगे, पर छूटे न झूठी रसम।। २४ ।।

मैं अपने परमधाम की इशारतें और निशानात लिखूंगा और अपने जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से उन इशारतों के छिपे रहस्य खोलूंगा। उस तारतम वाणी से तुम पहचान तो जाओगे पर बिरादरी की, सगे सम्बन्धियों की, दुनियां वालों की झूठी रस्मों रिवाजों को तोड़ न पाओगे।

तुम जाए झूठे खेल में, कर बैठोगे जुदे जुदे घर।
मैं आए इलम देऊं अर्स का, पर तुम जागो नहीं क्योंए कर।। २५ ।।

तुम झूठे खेल में जाकर अपने जुदा-जुदा घर बनाकर बैठोगे। मैं वहां आकर तुम्हें अपना ज्ञान दूंगा। पर तुम किसी तरह से भी नहीं जागोगे।

मैं रूह अपनी भेजोंगा, भेख लेसी तुम माफक।
देसी अर्स की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक।। २६ ।।

तब मैं अपनी रूह श्यामाजी को भेजूंगा जो तुम्हारे जैसा ही तन धारण करेंगी। वह परमधाम की कुल बातें याद कराएंगी पर तुम फिर भी मेरी पहचान न कर सकोगे।

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए।। २७ ।।

श्री श्यामाजी प्यारे धनी की प्यारी बातें रो-रोकर तुम्हें सुनाएंगे और तुम भी सुन-सुनकर रोओगी पर फिर भी कोई सावचेत न हो सकोगी।

खेल देखोगे दुख का, याद देसी मैं ए सुख।
मैं देऊंगा सब साहेदियां, पर तुम छोड़ न सको दुख।। २८ ।।

तुम जब दुःख का खेल देखोगे तब मैं परमधाम से अखण्ड घर के सुख याद कराने आऊंगा और सब ग्रन्थों से गवाहियां दूंगा, पर तुम फिर भी दुःख को नहीं छोड़ सकोगे।

मैं तुमारे वास्ते, करोंगा कई उपाए।
ए बातें सब याद देऊंगा, जो करता हों इप्तदाए।। २९ ।।

मैं तुम्हें जगाने के वास्ते कई उपाय करूंगा और इस घर की सारी बातें याद दिलाऊंगा जो शुरू से ही इश्क रब्द में हो रही हैं।

क्यों ऐसी हम से होएगी, क्या हम जुदे होसी माहें खेल।
ऐसी अकल क्यों होएसी, ए कैसी है कदर-लैल।। ३० ।।

तब रूहों ने श्री राजजी महाराज से कहा कि हमसे ऐसी भूल कैसे होगी? क्या हम खेल में जुदा हो जाएंगे? हमारी अक्ल पर परदा क्यों पड़ जाएगा? यह कैसी लैल तुल कदर की वियोग की रात्रि है?

Nijanand App

दूर तो करोगे नहीं, कदम तले बैठे हक।
हम फेरें तुमारा फुरमाया, ऐसे लूखे होसी मुतलक।। ३१ ।।

आप हमको अपने चरणों से दूर तो नहीं करोगे? अपने चरणों के तले ही तो बिठाकर रखोगे, फिर हम आपका आदेश लौटा देंगी। हम इतने सूने दिल वाले कैसे हो जाएंगे?

तुम बिना हम कबहूं, रेहे ना सकें एक दम।
क्यों होसीं हम नादान, जो ऐसा करें जुलम।। ३२ ।।

हे धनी! आपके बिना हम कभी भी एक क्षण नहीं रह सकते। हम ऐसे नादान कैसे हो जाएंगे कि इतना बड़ा अन्याय कर बैठें?

जैसा साहेब केहेत हो, ऐसी कबूं हमसे न होए।
सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए।। ३३ ।।

हे धनी! जैसा आप कह रहे हो ऐसी तो हम से कभी भी नहीं होगी। सौ बार आजमा कर देख लो। मोमिन से ऐसी गलती कभी नहीं होगी।

आप भूलें या हक कदम, या भूलें अर्स घर।
ऐसी निपट नादानी, हम करें क्यों कर।। ३४ ।।

हम आपको भूल जाएं या आपके चरणों को भूल जाएं या परमधाम को भूल जाएं, ऐसी नासमझी हम कैसे कर सकते हैं?

रूहों ऐसी आई दिल में, कोई खेल है खूबतर।
खेल देख हक वतन, आप जासी बिसर।। ३५ ।।

रूहों के दिल में ऐसा आया कि यह कोई बढ़िया खेल है जिसमें खेल देखकर श्री राजजी को अपने घर को और अपने आपको भूल जाएंगे।

ए जेती हुई रद-बदलें, त्यों त्यों खेल दिल चाहे।
फेर फेर मांगे खेल को, कोई ऐसी बनी जो आए।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जैसे-जैसे यह बात होती गई, वैसे-वैसे खेल देखने की चाह बढ़ती गई। कुछ ऐसी बात बन गई कि हमने बार-बार खेल की मांग की।

न तो जो बात आखिर होएसी, सो रबें आगूं दई बताए।
कह्या खेल जुदागी दुख का, तुम मांगत हो चित ल्याए।। ३७ ।।

नहीं तो हमारे ऊपर जो मुसीबतें खेल में आने वाली थीं, वह श्री राजजी महाराज ने पहले से ही बता दिया था और कह दिया था कि यह वियोग का खेल बड़ा दुःखदायी है जिसे तुम सब बड़े शौक से देखना चाहती हो।

हक आप सांचे होने को, सब विध कही सुभान।
त्यों त्यों दिल ज्यादा चाहे, वास्ते करने ऊपर एहेसान।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने आप को सच्चा साबित करने के लिए सब कुछ पहले से ही बता दिया। उससे मोमिनों के दिल में चाहना और बढ़ गई और कहा कि हमारे ऊपर एहसान क्यों कर रहे हो?

Nijanand App

मिनों मिनें करें हुसियारियां, हक खेल देखावें जुदागी।
एक कहे दूजी को मुख थें, रहिए लपटाए अंग लागी।। ३९ ।।

सखियां आपस में सावधान होने लगीं कि तैयार हो जाओ। श्री राजजी महाराज जुदाई का खेल दिखाने वाले हैं। तब एक दूसरे को कहती हैं कि आपस में हम लिपट कर बैठें।

क्यों हम जुदे होएसी, एक दूजी को छोड़ें नाहें।
क्यों भूलें हम हक को, बैठे खिलवत के माहें।। ४० ।।

जब हम एक दूसरे को छोड़ेंगे नहीं, तो अलग कैसे होंगे? जब हम मूल-मिलावे में बैठे हैं तो हम श्री राजजी को कैसे भूल जाएंगे?

हक कहे तुम भूलोगे, आप बैठे बका में जित।
मुझे भी तुम भूलोगे, ऐसा खेल देखोगे बैठे इत।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि इस अखण्ड घर में बैठकर भी मुझे भूल जाओगे। ऐसा खेल तुम यहां बैठे-बैठे देखोगे।

ऐसी क्यों होवे हमसे, ऐसे क्यों होवें बेसुध हम।
खेल फरेब लाख देखिए, पर क्यों भूलिए इन खसम।। ४२ ।।

रूहें कहती हैं कि हम ऐसे बेसुध कैसे हो जाएंगे? लाख बार आप झूठा खेल दिखाओ, पर धनी हम आपको नहीं भूलेंगे।

एक दूजी कहे रूहन को, तुम हूजो खबरदार।
खेल देखावें फरामोस का, जिन भूलो परवरदिगार।। ४३ ।।

एक रूह दूसरी रूह से कहती है कि तुम सावधान हो जाओ। श्री राजजी महाराज फरामोशी का खेल दिखा रहे हैं। अपने धनी को मत भूलना।

जो तूं भूले मैं तुझको, देऊंगी तुरत जगाए।
मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।। ४४ ।।

तू भूल जाएगी तो मैं तुझे जगा दूंगी। मैं भूल जाऊं, तो तू मुझे एक पल में बता देना।

इन बिध एक दूजी सों, मसलहत करी सबन।
क्या करसी खेल फरेब का, आपन मोमिन सब एक तन।। ४५ ।।

इस तरह से एक दूसरी ने एक दूसरी से सलाह कर ली और कहा कि हम मोमिन सब एक तन हैं। यह झूठा माया का खेल हमारा क्या बिगाड़ेगा?

सो क्यों भूलें ए सैयां, जो आगूं होवें खबरदार।
खेल देखावें चेतन कर, सो भूलें नहीं निरधार।। ४६ ।।

ऐसी ब्रह्मसृष्टियां जिनको पहले से सावधान कर दिया हो, वह कैसे भूल सकती हैं? जिन्हें सावधान करके खेल दिखाया जा रहा हो वह निश्चित ही नहीं भूलेंगी।

सो भूलेंगे क्यों कर, इस्क जिनको होए।
एक पाव पल जुदागीय का, क्यों कर सेहेवें सोए।। ४७ ।।

ऐसी ब्रह्मसृष्टियां जिनके अन्दर धनी का इश्क है, वह एक चौथाई पल की जुदाई कैसे सह सकती हैं? अपने धनी को कैसे भूल सकती हैं?

Nijanand App

इस्क सबों रूहों पूरन, वाहेदत का मुतलक।
क्यों जरा पैठे जुदागी, बीच रूहों हादी हक।।४८।।

सभी रूहों में परमधाम का पूर्ण इश्क है, इसलिए रूहों में, श्री राजजी महाराज में और श्यामा महारानी में थोड़ी सी भी जुदाई कैसे हो सकती है?

ए बोहोत रब्द बीच अर्स के, रूहों हक सों हुआ मजकूर।
अर्स बका के हजूरी, ए क्यों होवें हक सों दूर।।४९।।

परमधाम के बीच श्री राजजी और रूहों के बीच इश्क का बहुत रब्द हुआ। अखंड परमधाम में सदा श्री राजजी महाराज के चरणों में रहने वाले श्री राजजी से कैसे दूर हो सकते हैं?

इस्क का अर्स अजीम में, रब्द हुआ बिलंद।
तो फरामोसी में इस्क का, बेवरा देखाया खावंद।।५०।।

अर्श अजीम परमधाम में इश्क का बहुत बड़ा रब्द हुआ, इसलिए श्री राजजी महाराज ने फरामोशी में इश्क का ब्यौरा दिखाया।

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार।
फरामोसी हांसी होएसी, जिनको नहीं सुमार।।५१।।

श्री राजजी महाराज ने बड़े प्यार से अपने चरणों में बारह हजार को बिठा लिया। अब फरामोशी की हंसी बेशुमार होगी।

हक बैठे खेल देखावने, जिन फरामोसी हांसी होए।
इस्क हक का आवे दिल में, ए फरामोसीहांसी जाने सोए।।५२।।

श्री राजजी महाराज खेल दिखाने के वास्ते बैठ गए हैं। रूहें इस तरह, सतर्क होकर बैठ गईं कि हम पर इस फरामोशी की हंसी न हो। जिनके दिल में श्री राजजी का इश्क आ जाता है, यह फरामोशी की हंसी वही जान पाता है।

तिन वास्ते हकें पैदा किया, दई दूर जुदागी जोर।
और नजीक बैठाए सेहेरग से, यों देखाया खेल मरोर।।५३।।

इस वास्ते श्री राजजी महाराज ने यह संसार बनाया और रूहों को दूर इस माया के खेल में भेज दिया। सेहेरग से भी नजदीक चरणों के तले बिठाए रखा। इस तरह से उलझाकर खेल दिखाया।

अर्स बका बीच ब्रह्मांड में, चौदे तबकों में सुध नाहें।
किया सेहेरग से नजीक, गिरो बैठी बका माहें।।५४।।

ब्रह्माण्ड के चौदह लोकों में अखण्ड परमधाम की सुध नहीं थी। धनी ने वह अखण्ड परमधाम जहां रूहें चरणों तले बैठी हैं, उसे सेहेरग से नजदीक दिखा दिया।

दिया बीच ब्रह्मांड जुदागी, अजूं इनसे भी दूर दूर।
निपट दई ऐसी नजीकी, बैठे अंग सों लाग हजूर।।५५।।

श्री राजजी महाराज ने ब्रह्माण्ड में भेजकर आत्माओं को एक दूसरे से दूर कर दिया। जो परमधाम में धनी के सामने अंग से अंग लगाकर बैठी थीं उन्हें खेल दिखाने के लिए अपने पास रखा।

Nijanand App

ऐसा बुजरक खेल देखाया, ऐसा न देख्या कब।
ए बातें हांसी फरामोसी की, करसी इस्क ले अब।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसा महान खेल दिखाया जो अभी तक कभी नहीं देखा था। अब भूल जाने पर हंसी की बातें जब इश्क मिल जाएगा तो परमधाम में करेंगी।

फरामोसी दई जिन वास्ते, हांसी भी वास्ते इन।
इस्क ले ले हंससी, कयामत बखत मोमिन।।५७ ।।

मोमिनों पर जिस वास्ते फरामोशी दी है, हंसी भी उसी वास्ते होती है। कयामत के वक्त में सभी मोमिन अपने इश्क की ही चर्चा करेंगे और हंसेंगे।

ए बातें हुई सब अर्स में, रूहें बड़ीरूह हक साथ।
सो ए खेल पैदा हुआ, काहूं हाथ न सूझे हाथ।।५८ ।।

यह बातें परमधाम में मोमिनों में श्री श्यामाजी और श्री राजजी के बीच हुईं, इसलिए श्री राजजी महाराज ने ऐसा खेल बनाया जिसमें हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता, अर्थात् अपने साथियों की पहचान नहीं होती।

कई जातें कई जिनसें, कई फिरके मजहब।
भेख भाखा सब जुदियां, हक को ढूंढ़ें सब।।५९ ।।

यहां खेल में कई किस्म की जातियां हैं। कई तरह के धर्म, पंथ, पैंडे हैं जिनकी भेष और भाषा अलग-अलग है। सभी पारब्रह्म को ढूंढ़ रहे हैं।

ढूंढ़ ढूंढ़ सब जुदे परे, हक न पाया किन।
अव्वल बीच और आखिर लो, किन पाया न बका वतन।।६० ।।

सभी ढूंढ़-ढूंढ़कर अलग हो गए, परन्तु पारब्रह्म किसी को नहीं मिले। शुरू में, बीच में और आखिर तक अखण्ड घर किसी को नहीं मिला।

रसमें सबों जुदी लई, माहों-माहें कई लरत।
आप बड़े सब कहावहीं, पानी पत्थर आग पूजत।।६१ ।।

यहां आकर ब्रह्मसृष्टियों ने अलग-अलग रीति-रिवाज पकड़ लिए। वह आपस में इसी के लिए ही लड़ते हैं। पानी, पत्थर, आग की पूजा करते हैं और अपने आप को बड़ा कहलाते हैं।

ए ऐसा खेल अंधेर का, सब कहें हम बुजरक।
पर हक सुध काहू में नहीं, छूटी न सुभे सक।।६२ ।।

यह ऐसा माया का खेल है कि सभी अपने को सयाना समझते हैं। किसी को भी पारब्रह्म की सुध नहीं है और न उनके संशय ही मिटते हैं।

काहूं तरफ न पाई अर्स की, कहावत हैं दीनदार।
डूबे सब अपनी स्यानपे, जात हाथ पटक सिर मार।।६३ ।।

किसी को अखण्ड घर परमधाम की सुध नहीं हुई और अपने धर्म के कर्मठ कार्यकर्ता कहलाते हैं सब अपनी चतुराई में डूबे हैं और सिर में हाथ मारकर निराश हो जाते हैं।

Nijanand App

ऐसे में आए रसूल, हाथ लिए फुरमान।
फैलाया नूर आलम में, वास्ते मोमिनों पेहेचान।। ६४ ।।

मोमिनों की ऐसी हालत में रसूल साहब कुरान लेकर आए। मोमिनों को पहचान कराने के लिए कुरान का ज्ञान संसार में फैलाया।

आगूं आए खबर दई आखिर आवेगा साहेब।
रूहअल्ला इमाम उमत, होसी नाजी-मजहब।। ६५ ।।

उन्होंने आकर पहले से समाचार दिया कि आखिर में धाम के धनी आएंगे और श्यामा महारानी इमाम मेंहदी और मोमिनों की जमात का एक निजानन्द सम्प्रदाय चलेगा।

पुकार करी सबन में, कह्या आवेगा सुभान।
हिसाब ले भिस्त देयसी, ठौर हक बका पेहेचान।। ६६ ।।

मुहम्मद साहब ने आकर सबको पुकार कर कहा कि आखिर में पारब्रह्म आएंगे और सबका न्याय चुकाकर अखण्ड बहिश्तें प्रदान करेंगे और अखण्ड घर (परमधाम) की पहचान कराएंगे।

ऐसा खेल पैदा हुआ, और सोई आए मोमिन।
सोई खेल देखे पीछे, भूल गए आप वतन।। ६७ ।।

जैसा कहा था वैसा ही यह माया का संसार बना और मोमिन इसमें आ गए और खेल देखने के बाद अपने घर को भूल गए।

और भूले खसम को, गए खेल में रल।
कोई सुध बका की न देवहीं, जो कायम अर्स असल।। ६८ ।।

अपने धनी को भूल गए और खेल में मिल गए। जहां अखण्ड घर की कोई सुध नहीं देता।

बैठे ख्वाब जिमीय में, और दिल पर सैतान पातसाह।
नसल आदम हवाई, जो मारे खुदाई राह।। ६९ ।।

इस स्वप्न की जमीन में उनके दिलों पर शैतान (नारद) आकर बैठ गया जो आदम हव्वा (नारायण) की औलाद है जिसने परमात्मा की ओर जाने वाले रास्ते को बन्द कर दिया।

मोमिन आए इन नसल में, जित हक न सुन्या कान।
तिन जिमी क्यों पावें मोमिन, कायम अर्स सुभान।। ७० ।।

मोमिन ऐसे मनुष्य तन में आए जहां किसी ने पारब्रह्म का नाम भी नहीं सुना। ऐसी जमीन में मोमिन अपने अखण्ड घर तथा अपने धनी को कैसे प्राप्त करें?

मोमिन आए जुदे जुदे, जुदी जातें जुदी रवेस।
जुदे मुलक मजहब जुदे, जुदी बोली जुदे भेस।। ७१ ।।

मोमिन अलग-अलग जातियों में, ठिकानों में तथा रीति-रिवाजों में, अलग-अलग मुल्क में, अलग-अलग धर्म में, अलग-अलग बोली में तथा अलग-अलग भेष में आए। (अब पहचानो, कैसे पहचानोगे)।

चौदे तबक की दुनी को, काहू खबर खुदा की नाहें।
ऐसे किए मोहोरे खेल के, ए भी मिल गए तिन माहें।। ७२ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में पारब्रह्म की खबर देने वाला कोई नहीं है। संसार के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश ऐसे बनाए कि उनकी पूजा करने वालों में मोमिन भी आकर मिल गए।

Nijanand App

दुनियां चौदे तबक में, काहू खोली नहीं किताब।
साहेब जमाने का खोलसी, एही सिर खिताब।।७३ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्मांड में धर्मग्रन्थों के छिपे रहस्यों को किसी ने नहीं खोला। उन धर्मग्रन्थों में यह लिखा था कि आखिर के जमाने में पारब्रह्म आकर के इनके छिपे भेदों को खोलेंगे।

कुंजी ल्याए रूहअल्ला, दई हाथ इमाम।
सो गिरो मोमिनों मिलाए के, करसी सिजदा तमाम।।७४ ।।

रूह अल्लाह श्यामा महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लाए और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के हाथ में दी वह सब मोमिनों को बुलाकर मिला देंगे और सारी दुनियां उन पर सिजदा करेगी।

सो अग्यारै सदी मिने, होसी जाहेर हकीकत।
हादी मोमिन जानसी, हक की इसारत।।७५ ।।

ग्यारहवीं सदी के बीच हकीकत का ज्ञान जाहिर होगा श्री प्राणनाथजी और मोमिन श्री राजजी के संकेतों को समझ लेंगे।

अव्वल करी बातें अर्स में, वास्ते मोमिनों न्यामत।
कुन्जी खिताब सबे ल्याए, सोई फुरमान ल्याए इत।।७६ ।।

रसूल साहब ने शुरू में श्री राजजी से बातें कीं और मोमिनों के वास्ते कुरान का ज्ञान लाए। अब वही रसूल मलकी मुहम्मद बनकर तारतम ज्ञान की कुंजी लाए और वही हकी स्वरूप बनकर कुलजम सरूप की वाणी लाए।

सो मिली जमात रूहन की, जिन वास्ते किया खेल।
सो हक भी आए इन बीच में, सो कहे वचन माहें लैल।।७७ ।।

जिन रूहों के वास्ते खेल बनाया, वह मोमिन अब मिलने लगे। पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी इनके बीच आ गए और लैल तुल कदर की रात्रि में कुलजम सरूप का अखण्ड ज्ञान दे रहे हैं।

लैल गई पुकारते, आया बखत फजर।
ए अग्यारै सदी पूरन, तब खुली रूहों नजर।।७८ ।।

लैल तुल कदर की रात्रि का तीसरा भाग पुकारते-पुकारते बीत गया। अब जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान का सवेरा हुआ है। मुहम्मद साहब की ग्यारहवीं सदी पूर्ण हो गई और सम्पूर्ण ज्ञान आ जाने से रूहों की नजर खुल गई।

ए बुजरकी इस्क की, अबलों न जानी किन।
और मोहोरे सब खेल के, क्यों जाने बिना मोमिन।।७९ ।।

धनी के इश्क की इस महिमा को अब तक किसी ने नहीं जाना था। इस संसार के ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवी, देवता कैसे जान सकते हैं? यह मोमिन ही जानते हैं।

सो फरामोसी मोमिन को, हकें दई बनाए।
और हक जगावें ऊपर से, बिना इस्क न उठ्यो जाए।।८० ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को फरामोशी की नींद में सुला दिया। वही अब ऊपर का ज्ञान देकर जगाते हैं, लेकिन इश्क के बिना जागना सम्भव नहीं है।

Nijanand App

आप हकें दिल उठाए के, खेल किया फरामोस।
एती पुकारें हक की, आवत नाहीं होस।। ८१ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को परमधाम से हटाकर बेसुधी के खेल में लगा दिया। अब स्वयं जोर-जोर से पुकार रहे हैं, परन्तु आत्माओं को होश नहीं आ रहा है।

ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक।
ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इस्क।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह बातें बड़े गहरे रहस्य से भरी हैं जब तुमको इश्क मिलेगा तब तुम्हें इसकी सुध आएगी।

महामत रूहों हक सों हुआ, बहस इस्क वास्ते।
सो इस्क बिना क्यों पैठिए, बीच हक अर्स के।। ८३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रूहों की इश्क के वास्ते ही श्री राजजी महाराज से रद बदल (बातचीत) हुई थी। अब बिना इश्क के परमधाम में कैसे जा सकते हैं?

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ६०५ ॥

सूरत हक इस्क के मगज का बेसक

हाए हाए क्यों न सुनो रूहें अर्स की, हक बका वतन।
रूहअल्ला ने जाहेर किया, काहू सुन्या न एते दिन।। १ ।।

हाय री परमधाम की आत्माओ! तुम श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की बातों को क्यों नहीं सुनते हो? रूहअल्लाह श्यामा महारानीजी ने आकर हकीकत जाहिर कर दी है जो आज दिन तक किसी ने नहीं सुनी थी।

फरामोसी हकें दई, सो वास्ते हांसी के।
हाए हाए घाव न लागहीं, सुन के सब्द ए।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने फरामोशी की नींद हंसी के वास्ते दी है। हाय री रूहो! तुम्हें यह सब्द सुनकर दिल को चोट नहीं लगती।

ए साहेब हांसी करे, अर्स की अरवाहों सों।
हाए हाए विचार न आवहीं, ऐसी सखती हिरदेमों।। ३ ।।

यह श्री राजजी महाराज परमधाम की रूहों से हंसी कर रहे हैं। हाय-हाय तुम्हारे दिल इतने पत्थर हो गए कि विचार भी नहीं आता।

ए साहेब किने न देखिया, न किन सुनिया कान।
ढूंढ़ गए त्रैगुन, पर पाया न काहूं निदान।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज को आज दिन तक न किसी ने देखा न किसी ने सुना। ढूंढ-ढूंढकर त्रिगुन थक गए, परन्तु वह भी पारब्रह्म को प्राप्त नहीं कर पाए।

एक पल थें पैदा फना, कोट ब्रह्मांड नूर के।
सो नूर नूरजमाल के, मुजरे आवत इत ए।। ५ ।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। वही अक्षर ब्रह्म पारब्रह्म के दर्शन करने यहां (परमधाम) में आते हैं।

Nijanand App